DSSSB TGT & PGT SCHOLAR BATCH संस्कृत

DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

शुकनासोपदेश

Part -6

LIVE 28-06-2024 05:00 PM

उद्दामदर्पभटसहस्त्रोल्लासितासिलतापञ्जरविधृताप्यपक्रामति।

उत्कट अभिमान (गर्व) वाले सहस्त्रों (हजारो) योद्धाओं से उठाई गई (चमकायी गई) खड्ग लता- रूपी पिंजड़े में स्थापित की हुई (पकड़कर रखी गई) भी (यह लक्ष्मी) दूर चली जाती है (अर्थात् बच निकलती है)।

मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटापरिपालितापि प्रपलायते।

मदजल-रूपी वर्षा से अन्धकार-युक्त (अर्थात् अन्धकार करने वाले) हाथियों के समूह-रूपी मेघमाला से संरक्षित रहने पर (अर्थात् रक्षा की जाती हुई) भी (यह) भाग जाती है।

न परिचयं रक्षति ।

(यह) न परिचय की रक्षा करती है;

नाभिजनमीक्षते ।

न कुल को देखती है;

न रूपमालोकयते।

न रूप को निहारती (देखती) है (अर्थात् ध्यान नहीं रखती),

न कुलक्रममनुवर्तते ।

न कुल-परम्परा (मर्यादा) का अनुकरण करती है;

न शीलं पश्यति।

न शील (अर्थात् सच्चरित्र) को देखती है;

न वैदग्ध्यं गणयति।

न पाण्डित्य (चतुरता) की परवाह करती है;

न श्रुतमाकर्णयति ।

न शास्त्र को सुनती है;

न धर्ममनुरुध्यते।

न धर्म का अनुरोध करती है (अर्थात् झुकती है);

न त्यागमाद्रियते।

न त्याग (दया-दाक्षिण्य) का आदर करती है;

न विशेषज्ञतां विचारयति।

न विशेषज्ञता (अर्थात् सभी विषयों की जानकारी) का विचार करती है;

नाचारं पालयति।

न (शिष्ट) आचार का पालन करती है;

न सत्यमनुबुध्यते।

न सत्य (सच्चाई) को समझती है,

न लक्षणं प्रमाणीकरोति ।

(और) न (शरीरस्थ) लक्षणों को प्रमाण मानती है (अर्थात् जिन व्यक्तियों के शरीर में शुभ लक्षण हैं, प्रायः उनके पास भी नहीं होती)।

गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति ।

गन्धर्व-नगर की पंक्ति (रेखा) के समान (यह लक्ष्मी) देखते-देखते ही नष्ट हो जाती है (अर्थात् ओझल हो जाती है)

अद्याप्यारूढमन्दरपरिवर्तावर्तभ्रान्तिजनितसंस्कारेव परिभ्रमति ।

क्षीर सागर समुद्र मंथन : चौदह रत्न

आज भी मानो (समुद्र मन्थन के समय) मन्दराचल के घूमने से (सागर में) होने वाली भँवरों के चक्कर से उत्पन्न भ्रान्तिजनित संस्कार के कारण ही यह (लक्ष्मी) घूमती रहती है (अर्थात् एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के पास जाती रहती है)।

कमलिनीसंचरणव्यतिकरलग्न- नलिननालकण्टकेव न क्वचिदपि निर्भरमाबध्नाति पदम्।

कमलिनी में विचरण करने के सम्पर्क से लगे हुए कमलनाल के काँटों से घायल (अर्थात् पैर में चुभ जाने, या बिंधे हुए) के समान यह (लक्ष्मी) कहीं भी दृढ़त (पूर्णरूप) से पैर नहीं रखती।

अतिप्रयत्नविधृतापि परमेश्वरगृहेषु
विविधगन्धगजगण्डमधुपानमत्तेव परिस्खलति।

बड़े राजाओं (धनवान् पुरुषों) के घरों में अत्यन्त (अत्यधिक) प्रयत्न से स्थिर गी गयी भी यह मानो अनेक मदोन्मत्त हाथियों की कनपटी (गण्डस्थल) से बहने वाले मद का पान करने से मत्त (मतवाली) हुई-सी स्खलित हो जाती है (फिसल जाती है)।

पारुष्य-मिवोपशिक्षितुमसिधारासु निवसति ।

निष्ठुरता (कठोरता) सीखने के लिए मानो तलवार की धार में निवास करती है।

विश्वरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणमूर्त्तिम् ।

विश्वरूपता (सर्वव्यापकता अथवा अनेक रूपों को प्रकट करने की शक्ति) को प्राप्त करने के लिए मानो यह (लक्ष्मी) विष्णु भगवान् के शरीर का आश्रय लिए हुए है

अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव समुपचितमूलदण्डकोशमण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम् ।

और अत्यधिक अविश्वसनीय (विश्वास के अयोग्य) यह (लक्ष्मी) बढ़े हुए (पुष्ट) मूल (जड़) दण्ड (नाल), कोश (मध्य भाग) तथा बाह्य मण्डल वाले सन्ध्याकालीन कमल की भाँति समृद्धि को प्राप्त हुए मूल अर्थात् प्राप्त देश आदि, दण्ड अर्थात् सेना या कर, कोश अर्थात् खजाना और मण्डल अर्थात् सामन्त समूह या राज्यक्षेत्र वाले राष्ट्रमण्डल के राजा को भी छोड़ देती है

अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव
समुपचितमूलदण्डकोशमण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम् ।

तथा वृक्षों पर चढ़ने वाली लता की भाँति यह (लक्ष्मी) विटपों अर्थात् दुष्टों को पालने वालों का आश्रय ग्रहण करती है

लतेव विटपकानध्यारोहति ।

अर्थात् उनके पास चली जाती है।

वृक्ष

लता वृक्ष पर चढ़ती है

उसके समान

गङ्गेव वसुजनन्यपि तरङ्गबुद्बुदचञ्चला।

(आठ) वसुओं (देवों अथवा भीष्म) की माता होते हुए भी तरङ्गो तथा बुलबुलों से चंचल गङ्गा की भाँति यह लक्ष्मी भी धन (वसु) उत्पन्न करने वाली होते हुए भी तरङ्गों और बुलबुलों के समान चञ्चल है।

दिवसकरगतिरिव प्रकटितविविधसंक्रान्तिः ।

अनेक (राशियों में) संक्रान्तियों से युक्त सुर्य की गति के समान (यह लक्ष्मी) विविध (अनेक) व्यक्तियों में सञ्चरण करती है (अर्थात अनेक व्यक्तियों के पास घुमने वाली है)।

पातालगुहेव तमोबहुला।

अत्यधिक अन्धकार से युक्त पाताल की गुफा के समान (यह) अधिक तमो गुण वाली है।

अन्धा

हिडिम्बेव भीमसाहसैकाहार्यहृदया।

केवल भीम के साहस से (प्रभावित हो जाने के कारण उसके प्रति) खींचे जाने वाले हृदय से युक्त (घटोत्कच की माँ) हिडिम्बा राक्षसी के समान (यह लक्ष्मी) केवल प्रचण्ड (भयंकर) साहस से वश में वश में करने योग्य (आकृष्ट किये जाने योग्य) हृदय वाली है।

वर्षा

प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी।

विद्युत् को उत्पन्न करने (चमकाने) वाली वर्षा की भाँति यह अल्पकालीन प्रकाश अर्थात् सम्पन्नता को उत्पन्न करने वाली है। (एक के ऊपर दुसरे को खड़ा करने पर)

दुष्टपिशाचीव दर्शितानेक पुरुषोच्छाया स्वल्पसत्त्वमुन्मत्तीकरोति।

अनेक पुरुषों की ऊँचाई प्रदर्शित करके अल्प साहस वाले (व्यक्ति) को उन्मत्त (अर्थात् भय के कारण पागल-सा) करने वाली दुष्ट पिशाची के समान (यह लक्ष्मी) अनेक पुरुषों की समृद्धि (उन्नति दिखाकर निर्बल कमजोर) हृदय वाले व्यक्ति को (उन्नति पाने की आशा में) पागल बना देती है।

सरस्वतीपरिगृहीतमीर्ष्ययेव नालिङ्गति ।

विद्या

(यह लक्ष्मी) सरस्वती द्वारा ग्रहण किये गए (अपनाये गए मनुष्य) अर्थात् विद्वानों को मानो ईर्ष्या के कारण आलिङ्गन नहीं करती (अर्थात् गले नहीं लगाती)।

जनं गुणवन्तमपवित्रमिव न स्पृशति ।

गुणवान् पुरुष को अपवित्र की भाँति स्पर्श नहीं करती।

उदारसत्त्वममङ्गलमिव न बहुमन्यते ।

उदार-हृदय (व्यक्ति) का अमंगल के समान आदर नहीं करती।

सुजनमनिमित्तमिव न पश्यति ।

सज्जन (पुरुष) को अपशकुन (लक्षणरहित) के समान देखती (भी) नहीं।

अभिजातमहिमिव लङ्घयति।

कुलीन पुरुष को सर्पके समान लाँघ जाती है।

शूरं कण्टकमिव परिहरति।

वीर को काँटे की भाँति त्याग देती है।

दातारं दुःस्वप्नमिव न स्मरति।

दानी (व्यक्ति) का बुरे स्वप्न के समान स्मरण नहीं करती।

विनीतं पातकिनमिव नोपसर्पति । Mon

विनीत (विनयशील व्यक्ति) के पास पापी की भाँति नहीं जाती।

लक्ष्मी - वर्णं

मनस्विनमुन्मत्तमिवोपहसति ।

बुद्धिमान् (पण्डित) का पागल की भाँति उपहास करती है अर्थात् उसका मजाक बनाती है।